ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-2* March- 2020
Innovation The Research Concept

लहरी नामान्त काव्यों में भक्ति तत्त्व विमर्श

Devotional Elements Discussed In Lahri Eponymous Poems

Paper Submission: 13/03/2020, Date of Acceptance: 22/03/2020, Date of Publication: 25/03/2020

कान्ती देवी
शोधच्छात्रा,
संस्कृत विभाग,
हण्डिया पी0जी0 कालेज
हण्डिया, प्रयागराज
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल
विश्व विद्यालय जौनपुर
(उ0प्र0) भारत

सारांश

भारत वर्ष का समस्त प्राचीन ज्ञान भण्डार संस्कृत में ही है। भारतीयों के सभी धर्मग्रन्थ पुराण, रामायण, महाभारत, स्मृतिग्रन्थ, दर्शन, धर्मशास्त्र, महाकाव्य, काव्य, नाटक, गद्यकाव्य, गीतिकाव्य, स्तोत्र काव्य आख्यान साहित्य आदि संस्कृत में ही हैं। ज्ञान–विज्ञान का कोई ऐसा अंग नहीं है, जो संस्कृत भाषा में उपलब्ध नहीं है। यह प्राचीन ऋषि, महर्षियों, मनीषियों कवियों और तत्त्वज्ञों के अथक परिश्रम का फल है, कि इतना विस्तृत वाङ्मय संस्कृत में उपलब्ध है। इसी प्रकार से हमारे संस्कृत साहित्य में काव्यों का अत्यधिक महत्व है, काव्य के अन्तर्गत खण्डकाव्य और खण्डकाव्य का भेद स्तोत्र है, जो हमारे संस्कृत साहित्य में महाकाव्यों के नाम एवं स्तोत्र काव्यों के नामों के अन्त पदों में अनेकशः साम्य प्राप्त होता है–

जैसे– अनेक विद्वानों ने अपने महाकाव्यों एवं खण्डकाव्यों के नामों के अन्त में विजय आनन्द, वीर, अवदान, लहरी आदि का प्रयोग किया है। विजयान्त महाकाव्य तथा हरविजयम्, आनन्दानामान्त तथा नरनारायणानन्द महाकाव्य, हरिहरानन्द महाकाव्य इत्यादि। इसी प्रकार संस्कृत साहित्य में लहरी नामान्त काव्य भी है। लहरी नामान्त काव्य काव्यशास्त्रीय आचार्यों द्वारा लिखे गये हैं वे सभी स्तोत्र के अन्तर्गत ही आते हैं।

स्तोत्र का अर्थ– आराध्य देव की स्तुति। स्तोत्र साहित्य का उद्गम ऋग्वेद से ही होता है। ऋग्वेद में उषा, विष्णु, इन्द्र आदि देवों की अनेक सूक्तों में स्तुति है–गीता के ग्यारहवें अध्याय में श्रीकृष्ण के विराट रूप का वर्णन मिलता है–

''त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण–[1]
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम्–
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप।।''11/38

आध्यात्म– रामायण में श्री रामचन्द्र की ब्रह्मा के रूप में स्तुति हुई है। स्तोत्र साहित्य पूर्णतया भक्ति प्रधान है इनमें भावुकता, सहृदयता, मार्मिकता और सरसता कूट–कूट कर भरी हुई है।

All the ancient knowledge store of India is in Sanskrit. All the scriptures of Indians are Puran, Ramayana, Mahabharata, Smriti Granth, Philosophy, Theology, Epics, Poetry, Drama, prose poetry, Geetikavya, Stotra poetic narrative literature etc. in Sanskrit. There is no such part of knowledge science which is not available in Sanskrit language. It is the fruit of the relentless hard work of ancient sages, maharishis, mystical poets and philosophers, that such a detailed speech is available in Sanskrit. In the same way, in our Sanskrit literature, poetry has a great importance, under poetry, there is a distinction stotra of Khandakavya and Khandakavya, which in our Sanskrit literature is often found in the concordance between the names of the epics and the names of the hymn poetry -

Like - many scholars have used Vijay Anand, Veer, Awadan, Lahiri etc. at the end of their epics and block names. Vijayanta epic and Harvijayam, Anandanamantha and Naranarayanananda epic, Hariharanand epic etc. Similarly, Lahiri Namanta poetry is also in Sanskrit literature. The Lahri Namant poems are written by poetic scholars, they all fall under the hymn.

Meaning of Stotra - Praise of the Adorable God. Stotra literature originates from the Rigveda itself. In the Rigveda there is praise in many sukhas of the gods Usha, Vishnu, Indra, etc. - In the eleventh chapter of the Gita, the description of the great form of Shri Krishna is found.

"Tvamadidevah Purush: Puran-1
Stvamasya Vishvasya Pran Nidhanam.
Vettasi Vedic
Tvaya Tantav Vishwamantranup. "" 11/38

Spirituality - Sri Ramachandra is praised as Brahma in Ramayana. Psalm literature is completely devotional, it is full of sentimentality, compassion, poignancy and simplicity.

मुख्य शब्द : स्तोत्र साहित्य पूर्णतया भक्ति प्रधान है, लहरी काव्यो की प्राचीन गौरवमयी परम्परा है, देव- देवियों की उपासना स्तोत्रो का उद्देश्य है ।

प्रस्तावना

संस्कृत वाङ्मय में भक्ति का अर्थ–पूजा पाठ अथवा चिंतन द्वारा ईश्वर की उपासना करना तथा इन्हीं दोनों माध्यमों से ईश्वर की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करना। गीतानुसार निराकार भक्ति अर्थात् निराकार (निर्गुण) ईश्वर का चिंतन, साकार भक्ति अर्थात् साकार (सगुण) ईश्वर की पूजा–अर्चना से श्रेष्ठ है। इसी प्रकार निष्काम भक्ति सकाम भक्ति से श्रेष्ठ है। निष्काम भक्त वे होते हैं, जो किसी न किसी स्वेच्छा की पूर्ति के लिए ईश्वर की उपासना करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

भक्ति परक काव्यों का उद्देश्य यह है कि मनुष्य को सांसारिक दुःखों से छुड़ाकर भगवान की भक्ति में अर्पित करना, तथापि जिज्ञासा पूर्त्यर्थ उन स्तोत्रों का समावेश किया गया है। इन स्तोत्रों में विशेष उल्लेखनीय शंकराचार्य और पण्डितराज जगन्नाथ वेदान्तदेशिक कृत पच्चीस स्तोत्रग्रन्थ प्राप्त होते हैं। संस्कृत साहित्य में लहरी–काव्यों के लेखन की परम्परा बहुत पुरानी है। विभिन्न काव्यशास्त्री लहरी काव्यों के एक विशिष्ट विद्या के रूप में मान्यता दे रहे हैं। संस्कृत के प्राचीन लहरी काव्यों में भगवद्पाद शंकराचार्य की सौन्दर्य लहरी, आनन्द लहरी, शिवानन्द लहरी और पण्डितराज–जगन्नाथ की गंगालहरी को भी लहरी काव्य परंपरा में विशेष स्थान प्राप्त है। लहरी काव्यों की प्राचीन गौरवमयी परम्परा है, इन्हीं लहरी काव्यों को खण्डकाव्य भी कहते हैं।

बशर्ते उस काव्य का प्रतिपाद्य लहरी के समान जैसे– सागर में लहरियाँ एक दूसरे के साथ जुड़ी रहती हैं तथा नाना प्रकार की भंगियों को उत्पन्न करती परस्पर अभिन्न प्रतीत होती है, उसी प्रकार में भी भक्ति एवं श्रृंगार के सन्दर्भ अथवा अन्यान्य भी प्रवृत्तियाँ परस्पर भिन्न होती हुई भी मूलभाव को पौनःपुन्येन सम्पुष्ट करती हैं। लहरियों के समान तथा भाषा–सौन्दर्य की सृष्टि करती है तथा क्षण–प्रतिक्षण नयनासेचनक को बिखेरती रहती हैं तो उसी को विद्वतजन लहरी काव्य कहते हैं।

''परस्परं समासक्ता लहर्यो जलधौ यथा।[2]
भगिब्रजं जनयन्त्यो यान्त्यद्वैतस्वरूपताम्।।''

भक्ति विषयक स्तोत्रों में कवि द्वारा किसी आराध्य देवता, आचार्य पवित्र, नदी तीर्थ आदि की वन्दना हुई है, अपने आराध्य की महिमा और अपनी दीनता का निष्कपट भाव से निरूपण करते हुए संस्कृत के भक्त कवियों ने अपूर्त तन्मयता के साथ स्तोत्रकाव्य लिखे हैं, संस्कृत साहित्य के सभी प्रकारों में स्तोत्रकाव्य सर्वाधिक लोकप्रिय है। कई स्तोत्रों में अर्थ सरलता है तो कई अपने शब्द–सौन्दर्य से प्रभावित करते हैं। कुछ स्तोत्रों में रमणीय छन्द (उपजाति, सिखरिणी, वसन्ततिलका, पंच चामर) ही प्रभाव के लिए पर्याप्त हैं, जिस प्रकार ''पुष्पदन्त का शिवमाहिम्नः स्तोत्र'' सिखरिणी छन्द में रचित भगवान शिव की महिमा का वर्णन करने वाला यह स्तोत्र शिवभक्तों के बीच बहुत लोकप्रिय है। इसी प्रकार मयूर भट्ट का सूर्यशतक स्रग्धरा छन्द में अपनी ओजस्विता के कारण प्रसिद्ध है कवि ने सूर्य के विभिन्न अगों और साधनों का वर्णन किया है।

बाण भट्ट ने चण्डीशतक में भगवती दुर्गा की स्तुति की है, इसमें भी स्रग्धरा–छन्द के 100 पद्य हैं। इसी प्रकार अद्वैत वेदान्त के प्रवर्तक शंकराचार्य के नाम से संस्कृत में कई स्तोत्र मिलते हैं शंकराचार्य की चर्पटपंजारिका में संसार के असार आकर्षणों से दूर रहकर गोविन्द के प्रति आसक्ति पर बल दिया गया है–

''भज गोविन्दं भज गोविन्द गोविन्दं भज मूढ़मते।[3]
पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनम।
इह संसारे खलु दुस्तारे कृपया पारे पाहि मुरारे।।
भज0।।''

रघुवंशम् महाकाव्य् मे भी कहा गया है–

''समुद्रपत्न्योर्जलसन्निपाते[4]
पूतात्मनातमत्र किलाभिषेकात्।
तत्त्वावबोधेन विनापि भूय–
स्तनुत्यजां नास्ति शरीरबन्धः।।''13/58

इस गंगा–यमुना के संगम में स्नान करने से पवित्र आत्मा वाले जनों का सत्य–असत्य का ज्ञान न होने पर भी जो शरीर त्याग देता है, उसका फिर से सांसारिक बन्धन नहीं होता है। यह निश्चय है कि गंगा–यमुना में स्नान करने से जनों को मुक्ति हो जाती है।

कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय की द्वितीय वल्ली में भी– देव– विषयक वर्णन किया गया है–

''ऊर्ध्वं प्राणमुन्नयत्यमानं प्रत्यगस्यति।[5]
मध्ये वामनमासीनं विश्वे देवा उपासते।।2/3

इस मानव शरीर में नियमित रूप से प्राण अपानादि की क्रिया हो रही है वह उन परमात्मा की शक्ति और प्रेरणा से ही आ रही है। वे ही मानव हृदय में प्राण को ऊपर की ओर चढ़ा रहे हैं और अपान को नीचे की ओर ढकेल रहे हैं, उन हृदयस्थित परब्रह्मं पुरुषोत्तम् की सभी देवता उपासना कर रहे हैं।

संस्कृत साहित्य में स्तोत्र ग्रन्थों की संख्या सहस्त्राधिक है कुछ स्तोत्रों का प्रचार–प्रसार सार्वदेशिक है तो कुछ क्षेत्रीय है। विविध देव–देवियों की अर्चना, उपासना और आराधना इन स्तोत्रों का उद्देश्य है। इस प्रसंग में पण्डितराज जगन्नाथ जी ने भी विभिन्न स्तोत्रों की रचना विभिन्न देव–देवियों की स्तुति अपनी लहरियों के द्वारा की है। लघुकाय होने पर भी ये लहिरयाँ पण्डितराज की अद्भुत शैली एवं निश्छल हृदय की अभिव्यक्ति के कारण संस्कृत साहित्य में महत्व रखती है– उन्होंने कुल पाँच लहरियाँ लिखी हैं–

गंगा लहरी

यह शिखरिणी छन्द के 52 पद्यों में भगवती गंगा की स्तुति की गयी है यह संस्कृत जगत् में बहुत प्रसिद्ध है–

''जनानां मोक्षस्ते सुरधुनि कृपातों भवति हि[6]
प्रतीतिं प्राप्येमां तव तटनिवासी त्वयि रतः।
विमुच्याहं यागादिकमवतयः कलेशकरणं
तथा कृच्छं ज्ञानं जननि भवतीस्तोत्रनिरतः।। 52
गंगामहात्म्यम्

हे सुरधुनि! तुम्हारी कृपा से लोगों को मोक्ष होता है, तुम्हारे तट में रहने वाले लोग तुम्हारी भक्ति में लगे हैं। हे गंगा मौं मैं यज्ञादि कठिन ज्ञान को छोड़कर आपके स्तोत्र में लगा हूँ।

1. **अमृतलहरी–** यह 10 पद्यों का गीतिकाव्य है जिसमें भगवती यमुना की स्तुति है।
2. **सुधालहरी–** में भगवान सूर्य की स्तुति स्रग्धरा छन्द के 30 पद्यों में है।
3. **लक्ष्मीलहरी–** शिखरिणी छन्द के 41 पद्यों में भगवती लक्ष्मी की स्तुति है।
4. **करुणालहरी–** में विष्णु की स्तुति से सम्बद्ध कवि की विनम्रता का परिचय देने वाली स्तुति है।
5. **शिवानन्दलहरी–** शिवभक्ति के आनन्दसागर की हिलोरों का वर्णन है– जैसे हंस कमल–नाल की अभीप्सा करता है, चातक जल से भरे नील मेघ की ओर टकटकी लगाता है, चकोर चन्द्रमा में मोहित रहता है और चक्रवाक सूरज उगने की बाट जोहता है उसी भाँति शिव–भक्त भगवान शिव के चरणों की सेवा में आस लगाये रहता है, यही उसके लिए सबसे बड़ा आनन्द है। इसी आनन्द की तरंगे आदि शंकराचार्य जी इस स्तोत्र में वर्णित किये हैं, इन्होंने शिव, विष्णु और शक्ति की जैसी स्तुति शिवानन्दलहरी, विष्णु के शादिपादस्तोत्रम् और सौन्दर्यलहरी में मिलती है।[7]

सौन्दर्यलहरी

आदिशंकराचार्य जी ने शक्त्याराधन का गूढ़तम विशद वर्णन किये हैं। इसके अन्तर्गत इन्होंने भगवती की शोभा का नख–शिख तक सजीव चित्रांकन किया है।[8]

निष्कर्ष

संस्कृत वाङ्मय में लहरी–नामान्त काव्यों में स्तोत्र ग्रन्थों के द्वारा किसी देव को आराध्य मानकर मनुष्य भक्ति उपासना और आराधना करके अपने आप को जीवन रूपी संकट से बचाकर मोक्ष को प्राप्त हो सकता है। विविध देव–देवियों की अर्चना, उपासना और आराधना ही इन स्तोत्रों का उद्देश्य है। सामान्य जनों तथा भक्तों के बीच स्तोत्रों की लोकप्रियता भाषा के बन्धन को तोड़ देती है। संस्कृत न जानने वाले भी स्तोत्रों का पाठ और गान करते हैं।[9]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *संस्कृत साहित्य का इतिहास–पृष्ठ 363/364*
2. *श्रीमद्भगवद्गीता–पृष्ठ 283*
3. *संस्कृत साहित्य का इतिहास– पृष्ठ 365*
4. *रघुवंशमहाकाव्यम्– पृष्ठ 65*
5. *ईशादि नौ उपनिषद् के कठोपनिषद से पृष्ठ– 148*
6. *गंगालहरी–नारायण तीर्थकृता–गंगामहात्म्य्*
7. *संस्कृत साहित्य का इतिहास– पृष्ठ 368*
8. *शिवानन्द लहरी–पृष्ठ 2*
9. *सौन्दर्यलहरी–पृष्ठ–प्रा0–1*